नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha (संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय) (A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com
वेबसाइट: www.hindivishwa.org

शोधपरक रिपोर्ट

डॉ. धरवेश कठेरिया के नेतृत्व में स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण विषय पर हुआ शोध

डॉ. धरवेश कठेरिया
सहायक प्रोफेसर
जनसंचार विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
ई-मेल: dkskatheriya@yahoo.com
मो. 09922704241

- नए साल में लें भारत को स्वच्छ करने का प्रण
- साल में देश का प्रत्येक नागरिक कम से कम 100 घंटा स्वच्छता अभियान के लिए दे।
- 95 प्रतिशत उत्तरदाता का मानना है कि स्वच्छता अभियान के माध्यम से गांधी के सपनों को साकार किया जा रहा है।
- 85 प्रतिशत लोगों का मानना है कि यह अभियान लोगों को जागरूक करने में सफल रहा।
- स्वच्छता अभियान में ज्यादातर लोग देश को स्वच्छ और निर्मल बनाने के लिए जुड़े हैं।

स्वच्छ भारत अभियानः गांधी के सपनों को साकार कर रही सरकार

भारत की आजादी के प्रमुख सूत्रधार मोहनदास करमचंद गांधी जी ने जब देखा कि लोग अभावों के साथ-साथ गंदगी के साथ भी जीवन यापन कर रहे हैं, तो उनके अन्तर्मन की चेतना में स्वच्छता के बीज पल्लवन हेतु उन्होंने ने स्वच्छता अभियान चलाया। जिससे लोगों में इसके प्रति काफी जागरूकता देखने को मिली। मोदी सरकार के अनुसार साल में देश का प्रत्येक नागरिक कम से कम 100 घंटा इस अभियान के लिए दे। इन योजनाओं को गांधीजी के स्वच्छ भारत के सपने को साकार करने के उद्देश्य से लाया गया जिसकी वास्तव में जरूरत जान पड़ती है।

95 प्रतिशत हां में प्राप्त तथ्य यह साबित करते हैं कि सरकार गांधी के सपनों को साकार करने का सशक्त प्रयास कर रही है। विकल्पों के अन्तर्गत राजनीतिक लाभ 13, गांधी के विचारों को अमल करना 27, स्वच्छता के प्रति जागरूक करना 33, विश्व पटल पर भारत की स्वच्छ छवि का निर्माण 26 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। तथ्य साबित करते हैं कि आम लोगों का स्वच्छता के प्रति जुड़ाव निःस्वार्थ भाव से देखने को मिलता है। वहीं आंकड़ों के अनुसार 81 प्रतिशत लोग इस अभियान से जुड़े हैं। उक्त आंकड़े महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के जनसंचार विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. धरवेश कठेरिया के नेतृत्व में विषय- स्वच्छ भारत अभियान में गांधी दृष्टिकोण, सेवाग्राम (गांधी की कर्मभूमि) को केंद्र में रखकर किए गए शोध में सामने आया है।

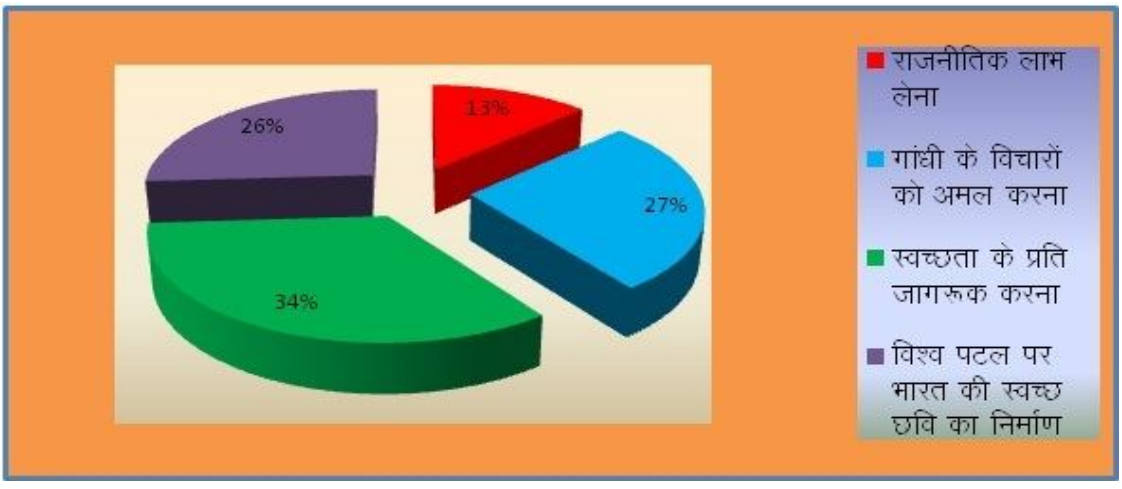

शोध का हवाला देते हुए डॉ. कठेरिया ने कहा स्वच्छता अभियान को किसी राजनीतिक पार्टी या व्यक्ति विशेष से जोड़कर न देखें। इस अभियान की सफलता गांव और शहरों की स्वच्छता है। अभियान के प्रति सरकार की सजगता और गांधी की बात पर उन्होंने कहा कि सच में यह अभियान गांधी के सपनों को साकार करने जैसा है। अभी इसमें बहुत विस्तार की जरूरत है। स्वच्छ भारत और निर्मल भारत की ओर हमलोग बढ़ रहे हैं। सरकार की योजना नीति के साथ-साथ आमजन की सहभागिता बहुत जरूरी है।

95 प्रतिशत हां में प्राप्त तथ्य यह साबित करते हैं कि सरकार गांधी के सपनों को साकार करने का सशक्त प्रयास कर रही है। तथ्य यह भी साबित करते हैं कि सरकार राजनीतिक लाभ के लिए गांधी के विचारों को इस तरह के कार्यक्रमों से जोड़कर लाभ लेने का प्रयास कर रही है। स्वच्छ भारत अभियान की सफलता में हां विकल्प के अन्तर्गत 85 प्रतिशत मतों से साबित होता है कि यह अभियान लोगों को जागरूक करने में सफल हो रहा है। 81 प्रतिशत मत इस अभियान की सफलता को साबित करते हैं और नहीं में प्राप्त 19 प्रतिशत मत कुछ हद तक लोगों में इस अभियान के प्रति नकारात्मक दृष्टि भी दर्शाते हैं। यहां पर स्वभाविक है कि 19 प्रतिशत मत उन प्रतिभागियों का भी हो सकता है जो वर्तमान सरकार के विचारों से सहमत नहीं हैं। इसमें वे लोग भी हो सकते हैं जो सरकार के विपक्ष में बैठकर विरोध कर रहे हैं।

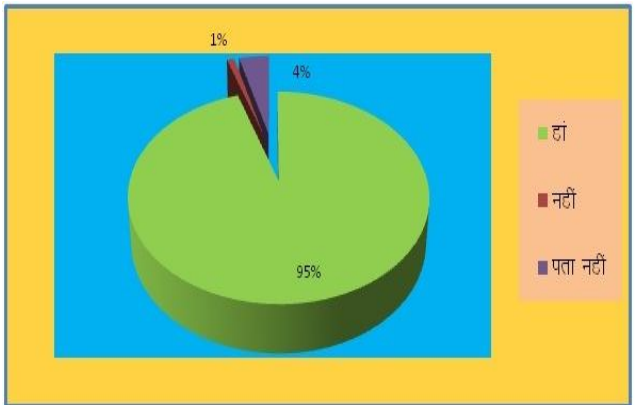

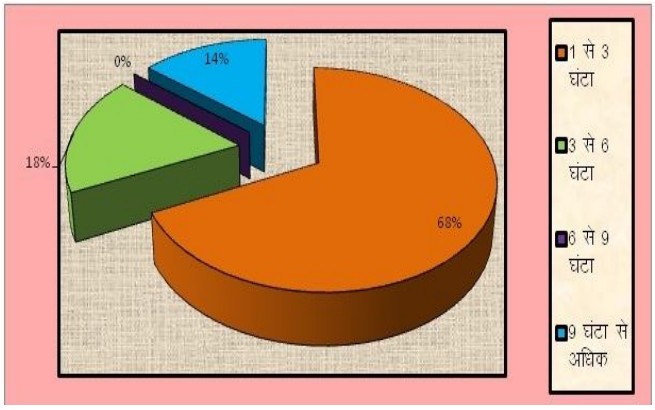

शोध संबंधी तथ्यों और आंकड़ों के संकलन के लिए सौ प्रश्नावली को आधार बनाया गया है। अध्ययन को स्वरूप देने के लिए शोध विषय- स्वच्छ भारत अभियान में गांधी दृष्टिकोण, को गांधी की कर्मभूमि सेवाग्राम पर केंद्रित किया गया है। गांधी की कर्मभूमि सेवाग्राम देखने आए विभिन्न प्रांतों के पर्यटकों से प्रश्नावली के माध्यम से शोध का स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया गया है। साथ ही सेवाग्राम आए कुछ विदेशी सैलानियों के मतों को भी आधार बनाया गया है।

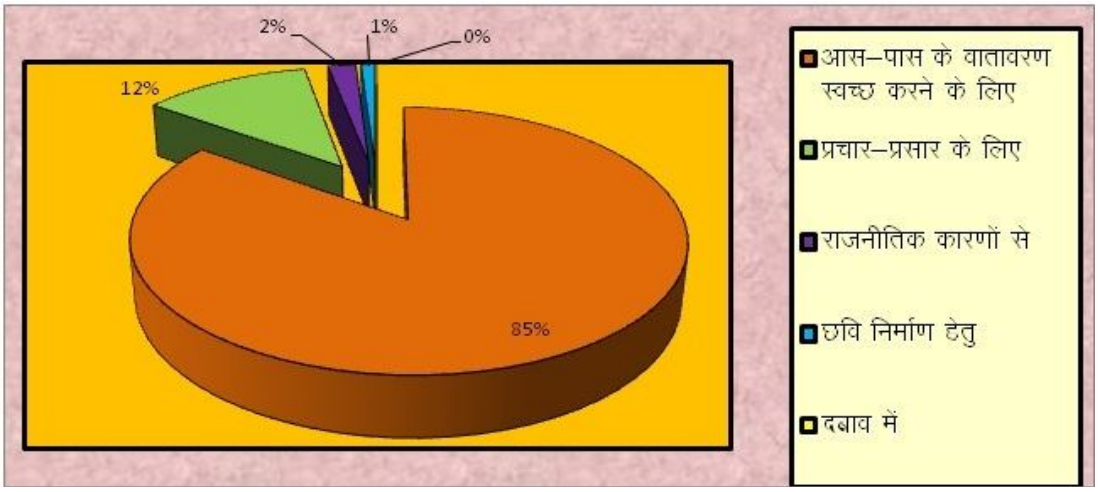

85 प्रतिशत लोगों का मानना है कि वे स्वच्छता अभियान से अपने आसपास को स्वच्छ रखने के इरादे से जुड़े हैं। इससे यह साफ होता है कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान को लोगों ने आत्मसात करते हुए दिल से अपनाया है। क्योंकि पर्यावरण प्रदूषण की समस्या आज विश्व स्तर पर गंभीर समस्या बन चुकी है। इसे आम आदमी भी समझ रहा है। शायद इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए आम आदमी इस अभियान में जोर-शोर से अपनी सहभागिता दर्शा रहा है। 62 प्रतिशत मत इस बात का संकेत देते हैं कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से लोगों में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध करने की क्षमता बढ़ी है। स्वच्छ भारत अभियान के बाद से गंदगी से होने वाली बीमारियों में तेजी से कमी आई है। शोध में प्राप्त 70 प्रतिशत आंकड़े यह साबित करते हैं।

जबकि नहीं के अन्तर्गत 30 प्रतिशत आंकड़े प्राप्त होते हैं। 73 प्रतिशत आंकड़े यह साबित करते हैं कि इस अभियान से जानी-मानी हस्तियों के जुड़ने से लाभ हुआ है।

शोध अध्ययन में डॉ. कठेरिया के अलावा जनसंचार विभाग के पीएच.डी. शोधार्थी, निरंजन कुमार, एम.फिल शोधार्थी- रत्नसेन भारती, विनय कुमार यादव, एम.फिल. शोधार्थी डायस्पोरा-लाल सिंह, एम.ए. जनसंचार के छात्र,अविनाश त्रिपाठी एवं आईसीएसएसआर परियोजना के शोध सहायक, नीरज कुमार सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

आजादी के 68 साल बाद भी स्वच्छ भारत का सपना, सपना ही रहा है। धरातल पर तो इसने रेंगना भी नहीं सीखा। जहां-तहां गंदगी का अंबार आसानी से दिखाई पड़ जाता है, अधिकतर बीमारियों को यही गंदगियां आमंत्रण देने का कार्य भी करती हैं। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के 145वें जन्मदिन 2 अक्तूबर 2014 को पुनः भारत को स्वच्छ करने का बीड़ा उठाया है, जिसको पूरा करने यानि भारत को स्वच्छ करने का लक्ष्य बापू के 150वें जन्मदिन को रखा गया हैं। इस अभियान का नाम 'स्वच्छ भारत अभियान' है।